जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – सितम्बर 2024 ।। अंक – 50 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

जीविका से
आत्मनिर्भरता की ओर
(पृष्ठ – 02)

छोटे उद्यम से बड़ी सफलता
(पृष्ठ – 03)

संगठित हुआ जीविका दीदियों का
किराना कारोबार
(पृष्ठ – 04)

महिलाओं में स्वावलंबन से आया सामाजिक परिवर्तन

ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त करने के उद्देश्य से बिहार सरकार ने वर्ष 2007 में जीविका परियोजना की शुरुआत की थी। पिछले करीब डेढ़ दशक के अपने सफर के दौरान जीविका ने बिहार की महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान हेतु अनेकों कार्य किये हैं। परिणाम स्वरूप बिहार की महिलाएँ अब प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रही हैं। इससे न केवल महिलाओं में स्वावलंबन आया है बल्कि सामाजिक फ़िज़ा भी बदल रही है। जीविका स्वयं सहायता समूहों की वजह से ग्रामीण स्तर पर गरीब परिवारों की महिलाओं में आई आत्मनिर्भरता, जागरूकता एवं सामूहिकता की वजह से व्यापक सामाजिक परिवर्तन भी हुआ है।

बहरहाल जीविका समूह से जुड़कर महिलाएँ समाज के हित में विचार–विमर्श करती हैं। समाज की भलाई हेतु उचित एवं सामूहिक निर्णय लेती हैं। आवश्यकता पड़ने पर वे एक–दूसरे की मदद भी करती हैं। सामाजिक भेद–भाव को खत्म करते हुए विभिन्न जाति एवं धर्म की महिलाएँ अब जीविका के सामुदायिक संगठनों की बैठकों में एक–साथ बैठती हैं। इससे समाज में आपसी विश्वास और प्रेम का वातावरण बना है।

समूह से जुड़ी निरक्षर महिलाओं को हस्ताक्षर करना सिखाया गया है। ये महिलाएँ पहले किसी की पत्नी–माँ– बहु या मायके के नाम से जानी–पहचानी जाती थीं, लेकिन जीविका समूह में जुड़ने के बाद उन्हें अपने नाम से पहचान मिली है। अब वे खुद के नाम से पुकारी जाती हैं जिससे उनमें आत्मसम्मान का भाव आया है। जीविका समूह से जुड़ी महिलाओं को सामूहिक रूप से 'जीविका दीदी' के नाम से एक पहचान मिली है।

जीविका समूह से जुड़े तमाम क्रियाकलापों में अब वे आत्मविश्वास के साथ करती हैं। जीविका दीदियाँ समूह के काम से बैंक एवं अन्य सरकारी कार्यालय पहुँच कर, वहाँ अधिकारियों के साथ संवाद करती हैं और अपने कामों का सुगमतापूर्वक निष्पादन कराती हैं। समूह के माध्यम से दीदियों ने बचत के महत्व को समझा एवं समूह से सस्ते ब्याज दर पर ऋण लेकर साहूकारों से मुक्ति पाई है। साथ हीं समूह की सहायता से उन्हें विभिन्न विषयों की जानकारी मिली है, जिससे उन्हें जीविकोपार्जन गतिविधियाँ करने की राह आसान हुई है। यही कारण है कि जीविकोपार्जन के तमाम क्षेत्रों में इन्होंने अपना कदम बढ़ाया है और अभूतपूर्व सफलता हासिल की है।

समाज के व्यापक हित को ध्यान में रखते हुए जीविका दीदियों ने समाज सुधार अभियान के सामाजिक मुद्दों पर भी कार्य कर रही है। समाज को पूर्ण रूपेण मद्य निषेध करने, बाल–विवाह एवं दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों से मुक्त करने, पर्यावरण का संरक्षण करने जैसे कार्यों में भी जीविका दीदियाँ महती भूमिका निभा रही हैं। लिहाजा जीविका सामुदायिक संगठनों की सक्रियता एवं निर्णायक भागीदारी से समाज में व्यापक परिवर्तन आया है। जीविका दीदियों की इन्ही प्रयासों से समाज में उनकी महत्ता बढ़ी है। वर्त्तमान में विभिन्न विभागों के कई योजनाओं का क्रियान्वयन भी जीविका दीदियों द्वारा किया जा रहा है।

लखपति दीदी पूनम की कहानी

पूनम दीदी खगड़िया जिला अन्तर्गत सन्हौली पंचायत की निवासी हैं। उनका विवाह एक सामान्य परिवार में हुआ था। उनके पति कपड़े की एक दुकान में काम करते थे। इससे मिलने वाली मजदूरी से उनके परिवार का भरण–पोषण होता था। लेकिन मजदूरी से होने वाली सीमित आय से परिवार की जरूरतों की पूर्ति करना संभव नहीं हो पा रहा था जिसके कारण घर चलाना मुश्किल हो रहा था।

वर्ष 2012 में पूनम दीदी पूजा जीविका समूह से जुड़ी। यह समूह वसुंधरा जीविका महिला ग्राम संगठन और विशाल जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ से सम्बद्ध है। समूह से जुड़ने के बाद पूनम ने प्रति सप्ताह 10 रूपये की बचत शुरू की। इसके बाद समूह के सहयोग से इन्होंने कपड़ों की सिलाई का काम प्रारंभ किया। शुरूआत में सिलाई का अनुभव नहीं होने के कारण उन्हें बहुत कम आमदनी होती थी। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। वह पेटीकोट की सिलाई और बिक्री का थोक व्यवसाय शुरू करना चाहती थी। इसके लिए सर्वप्रथम इन्होंने बाजार में पेटीकोट के दामों की जानकारी ली। यह व्यवसाय शुरू करने के लिए उन्हें पूंजी की दरकार थी। इसके लिए उन्होंने समूह से 50,000 रुपये ऋण लिया। इस राशि से इन्होंने सबसे पहले थोक भाव में पेटीकोट सिलाई हेतु कपड़ा खरीदा। इसके बाद वह पेटीकोट सिलने का काम करने लगी। पूनम दीदी अब थोक मात्रा में पेटीकोट तैयार कर इसे बाजार में दुकानदारों को बेचती है। इस व्यवसाय से उन्हें हर महीने लगभग 20,000 रुपये से अधिक की आमदनी हो जाती है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति सुधरी है। लगन के सीजन में उनकी आमदनी बढ़ जाती है।

वर्तमान में पूनम दीदी अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलवा रही है। उनकी मेहनत और लगन का परिणाम है कि उनके बड़ा बेटा को रेलवे में तकनीशियन के पद पर नौकरी लग गई है। वहीं छोटा बेटा दिल्ली में पढ़ाई कर रहा है। अपने बच्चों को आगे बढ़ता देख पूनम दीदी काफी खुश है।

जीविका की मदद से पूनम ने उद्यमिता के क्षेत्र में कदम रखकर अपने परिवार को खुशहाल बनाया है। जीविका ने उन्हें रोजगार के साथ आत्मसम्मान के साथ जीने का अवसर प्रदान किया।

जीविका से आत्मनिर्भरता की ओर

जहानाबाद जिला की कल्पना जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य बेबी कुमारी आर्थिक तंगी से जूझ रही थी। उनके पति राजेन्द्र प्रसाद सिंह एक किसान हैं। उनके 5 बच्चे हैं। लेकिन खेती से आमदनी कम होने की वजह से उनके लिए परिवार का पालन–पोषण करना मुश्किल हो रहा था।

परिवार की कमज़ोर आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु बेबी देवी वर्ष 2021 में कल्पना जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। बेबी दीदी अपने समूह से ऋण का लेन–देन करने लगी। समूह की बैठकों में नियमित रूप से हिस्सा लेने से उन्हें इस बात का एहसास हुआ कि परिवार की आमदनी बढ़ाने के लिए उन्हें जीविकोपार्जन की दिशा में कदम आगे बढ़ाना होगा। दीदी के पति परंपरागत तरीके खेती करते थे। लेकिन पूँजी के अभाव में खेती से अच्छी पैदावार नहीं हो पाती थी। इसके बाद बेबी दीदी ने समूह से 50 हज़ार रुपये ऋण लेकर खेती में पूंजी निवेश किया। साथ ही पति–पत्नी दोनो मिलकर खूब मेहनत की। मेहनत रंग लाई और पैदावार काफ़ी अच्छी हुई। इसके बाद दीदी ने कभी मुड़कर पीछे नहीं देखा। बेबी दीदी का आत्मविश्वास बढ़ गया। समूह से लिए ऋण चुकाने के बाद दीदी ने तय किया कि वो कोई नया रोज़गार करेगी ताकि उनका सबसे बड़ा बेटा जो बी. सी. ए. करने के बाद नौकरी की तलाश कर रहा है उसे रोज़गार से जोड़ सके।

इसी सोच के साथ बेबी दीदी ने समूह से पुन: 50 हज़ार रुपये ऋण लिया और साइबर कैफ़े का व्यवसाय शुरू किया। दीदी का बेटा अब साइबर कैफ़े चलाता है। कैफ़े से प्रति माह 15 से 18 हज़ार रुपये की आमदनी हो जाती है। इधर, दीदी अपने पति के साथ मिलकर अच्छी तरह खेती करती हैं। अब दीदी के परिवार की मासिक आय बढ़कर 25 हज़ार रुपये से ज्यादा हो गई है। पहले आर्थिक तंगी से जूझ रही बेबी देवी जीविका से जुड़कर अब लखपति दीदी बन गई है।

संघर्ष से सफलता तक

जमुई जिले के सोनो प्रखंड के ढोढरी पंचायत स्थित पिपराबांक गाँव की निवासी सोनी देवी आज एक लखपति दीदी के रूप में जानी जाती हैं। आरती जीविका स्वयं सहायता समूह की अध्यक्ष सोनी देवी की सफलता की कहानी पूरे देश में प्रसिद्ध हो चुकी है। नई दिल्ली में आयोजित 15 अगस्त 2024 को स्वतंत्रता दिवस समारोह में उन्हें विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया, जो उनके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है। सोनी देवी कहती है कि यह उनके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पल था और इसके लिए वह जीविका को श्रेय देती है, जिसने उन्हें इस मुकाम तक पहुँचाया है।

सोनी देवी का जीवन शुरुआत में कठिनाइयों से भरा रहा। उनके पति अजय कुमार सिंह गाँव के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर प्रति माह मात्र तीन हजार रुपये कमाते थे, जिससे परिवार का गुजारा मुश्किल से होता था। उनकी दोनों बेटियों की शिक्षा भी इस कारण प्रभावित हो रही थी। 2018 में सोनी देवी के जीवन में बदलाव आया जब उन्होंने जीविका के आरती समूह से जुड़कर 10 हजार रुपये का पहला ऋण लिया और घर से ही साड़ी का व्यवसाय शुरू किया। उनका व्यवसाय धीरे–धीरे बढ़ता गया और इसके बाद उन्होंने 50 हजार रुपये का और ऋण लेकर साड़ी के साथ श्रृंगार सामग्री का भी व्यापार शुरू किया।

कोरोना महामारी के दौरान उन्होंने जीविका के लिए मास्क सिलाई कर अतिरिक्त आय अर्जित की। अपनी मेहनत और बचत से सोनी देवी ने अपने पति के लिए एक जनरल स्टोर भी खुलवायी है जिससे उनके परिवार की आमदनी में बढ़ोतरी हुई। अब तक उन्होंने जीविका समूह से कुल चार लाख रुपये का ऋण लेकर अपने व्यवसाय को विस्तार किया है, जिससे आज उनकी मासिक आमदनी बढ़कर 20 हजार रुपये तक पहुँच गई है।

प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम योजना के तहत मिले 30 हजार रुपये के ऋण से वह अपने व्यवसाय को विस्तार किया है। उनकी दोनों बेटियाँ अब अच्छे स्कूल में पढ़ रही हैं और उनका परिवार खुशहाल जीवन जी रहा है।

छोटे उद्यम से बड़ी सफलता

सुपौल जिले के किशनपुर प्रखंड में स्थित मलाढ़ पंचायत की निवासी रूबी देवी के परिवार की आर्थिक स्थिति बेहद दयनीय थी। उनके पति विवेक कुमार प्रखंड मुख्यालय में एक दुकान में सेल्समैन की नौकरी करते थे। इससे उन्हें प्रति माह महज ढाई से तीन हजार रुपये मिलते थे, जो परिवार की जरूरतों के लिए काफी नहीं थे। रूबी देवी इंटर तक पढ़ी–लिखी है, इसके बावजूद वह घर के कामों तक ही सीमित थी। परिवार का भरण–पोषण उनकी सबसे बड़ी चिंता थी।

26 दिसंबर 2014 को रूबी देवी ने जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ने का निर्णय लिया। समूह के साथ जुड़ने के बाद उनके जीवन में बदलाव आना शुरू हो गया। उन्होंने भारती जीविका ग्राम संगठन के अंतर्गत जीविका मित्र के रूप में काम करना शुरू किया और प्रति माह डेढ़ से दो हजार रुपये कमाने लगी। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ गया।

रूबी देवी ने अक्टूबर 2016 में समूह से 50,000 रुपये ऋण लेकर शादी समारोह और आयोजनों में इस्तेमाल होने वाले बर्तन खरीदने का फैसला किया। नवंबर 2016 में उन्होंने टेंट हाउस का व्यवसाय शुरू किया। इस व्यवसाय में उसने 52,000 रुपये का निवेश किया और बर्तन खरीदकर उन्हें भाड़े पर देना शुरू किया। इसके प्रचार के बाद लोगों ने बर्तनों को किराए पर लेना शुरू किया। इससे उन्हें अब तक करीब 60,000 रुपये की आमदनी हुई है।

रूबी देवी ने अपने पति के लिए भी स्वरोजगार की योजना बनाई और समूह से 70,000 रुपये ऋण लेकर एक ऑटो खरीदा। ऑटो चलाकर उसके पति अब रोजाना 400 से 500 रुपये की आमदनी कर रहे हैं। दोनों व्यवसायों से उनके परिवार की मासिक आमदनी 15 से 16 हजार रुपये हो गई है। जीविका के सहयोग से रूबी देवी अब एक सफल व्यवसायी के रूप में आपनी पहचान बनायी है।

संगठित हुआ जीविका दीदियों का किराना कारोबार

भागलपुर जिला के बिहपुर प्रखंड में झंडापुर स्थित जीविका के ग्रामीण बाजार में महिलाओं की भीड़ लगी है। वे थैला भर–भरकर सामान खरीद रही हैं। दरअसल ये सभी महिलाएँ जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं और किराना व्यवसाय का संचालन करती हैं। वे झंडापुर में स्थित जीविका के ग्रामीण बाजार में अपनी किराना दुकानों के लिए वस्तुओं की थोक खरीदारी करती हैं। इससे इनके किराना व्यवसाय को नया आयाम मिला है।

जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाएँ बहुतायत स्तर पर ग्रामीण क्षेत्रो में किराना व्यवसाय संचालित कर अपना जीविकोपार्जन करती हैं। ग्रामीण स्तर पर किराना दुकान चलाने वाली इन जीविका दीदियों के पास थोक मूल्य पर किराना वस्तुओं की खरीद हेतु पर्याप्त विकल्प का अभाव रहता है। ऐसे में उन्हें अक्सर बाजार से खुदरा क्रय करना पड़ता था। इस कारण वे किराना वस्तुओं की बिक्री से अधिक मुनाफा नहीं अर्जित कर पाती थी। साथ ही साथ अच्छी गुणवत्तापूर्ण वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित नहीं कर पाने के कारण वह अपने व्यापार को आगे नहीं बढ़ा पा रही थी। ऐसे में जीविका दीदियों को उनके किराना व्यवसाय में सहयोग प्रदान करने के लिए एक मंच की परिकल्पना की गयी है, जो किराना दुकानदारों का एक प्रतिनिधित्व तैयार कर कंपनियों से सीधे करार कर अच्छी गुणवत्तापूर्ण वस्तुओं को उचित मार्जिन पर खरीद कर अपने किराना दुकानदार सदस्यों को उपलब्ध करा सकें। किराना दुकान चलाने वाली जीविका दीदियों के सामूहिक प्रतिनिधित्व को ग्रामीण बाजार का नाम दिया गया है। ग्रामीण बाजार ऐसा व्यवसायिक संगठन है, जिसमें जीविका संपोषित स्वयं सहायता समूह के वैसे सदस्य जो खुदरा किराना व्यवसाय करते हैं, ग्रामीण बाजार से सामान खरिद कर अपने किराना व्यवसाय को लाभप्रद तरीके से संचालित करते हैं। इससे एक ओर जहाँ ये किराना व्यवसायी दीदियाँ किराना वस्तुओं की खुदरा बिक्री कर मुनाफा अर्जित करती हैं वहीं ग्रामीण बाजार को थोक बिक्री पर होने वाले मुनाफे का भी अंश इन्हें प्राप्त होता है।

ग्रामीण बाजार जीविका संपोषित एवं प्रायोजित योजना है, जिसके निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. किराना दुकानों के संगठनात्मक शक्ति से बाजार में बेहतर मुनाफे पर व्यवसाय करना।
2. ग्रामीण स्तर पर असली एवं गुणवत्तापूर्ण वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
3. जीविका समूहों के उत्पादित गुणवत्तापूर्ण समानो को बाजार मुहैया करवाना।

वर्तमान समय में भागलपुर जिले में 7 ग्रामीण बाजार में संचालित है, जिसमें कुल 388 किराना व्यवसायी दीदियाँ इससे जुड़कर लाभान्वित हो रही हैं। इन्हें में से एक ग्रामीण बाजार बिहपुर में भी जीविका दीदियों द्वारा संचालित किया जा रहा है। बिहपुर में संचालित ग्रामीण बाजार से कुल 42 जीविका दीदियाँ जुड़ी हैं। इनके द्वारा प्रत्येक माह यहां खरीदारी की जाती है। इस ग्रामीण बाजार की स्थापना हेतु परियोजना के द्वारा कुल 19 लाख 78 हजार रुपये की निधि उपलब्ध कराई गई थी। जुलाई 2024 तक इस ग्रामीण बाजार के द्वारा अब तक कुल 1 करोड़ 12 लाख 29 हजार रुपये मूल्य के किराना वस्तुओं की खरीदारी की जा चुकी है वहीं इनमें से अब तक कुल 1 करोड़ 2 लाख 30 हजार रुपये मूल्य के किराना सामानों की बिक्री की जा चुकी है। पिछले एक साल में ग्रामीण बाजार, बिहपुर के द्वारा 54 लाख 44 हजार रुपये मूल्य का कारोबार किया गया है। इस कारोबार से ग्रामीण बाजार को 1 लाख 99 हजार रुपये का मुनाफा अर्जित हुआ है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार